उत्पादन संघर्ष के साथ वर्ग संघर्ष भी जरूरी

"दुनिया में दो प्रकार के प्रमुख संघर्ष हैं – एक है वर्ग संघर्ष और दूसरा उत्पादन संघर्ष। देश में किसान और मजदूर हर दिन उत्पादन संघर्ष में भिड़े रहते हैं। तभी तो अनाज पैदा होता है, कारखानों में माल बनता है, खदानों में खनिज निकलता है, मकान बनते हैं, रास्ता बनता है, रेल–मोटर चलती है। यह सब तो उत्पादन संघर्ष का फल है। परंतु आज की समाज व्यवस्था में उत्पादन के साधनों पर पूंजीपतियों का कब्जा है, इसलिए जो भी पैदा होता है वह पूंजीपतियों के भंडार में जा पहुंचता है। . . . . . इसलिए आज सिर्फ अन्न पैदा करने से ही नहीं चलेगा, उत्पादन संघर्ष के फलों पर अधिकार जमाने के लिए लुटेरे वर्ग के खिलाफ संघर्ष भी करना पड़ेगा। लुटेरे वर्ग के खिलाफ संघर्ष को ही वर्ग संघर्ष कहेंगे। . . . . . (राजहरा का) मजदूर उत्पादन संघर्ष के साथ–साथ वर्ग संघर्ष में भी हिस्सा ले रहा है। खदानों में पत्थर के साथ संघर्षरत है और मैदान में पूंजीपति एवं लुटेरों के खिलाफ संघर्ष में बहादुरी के साथ आगे बढ़ रहा है।"

(सी. एम. एस. एस. के मुखपत्र 'साप्ताहिक मितान' के 9 सितम्बर 1977 को प्रकाशित प्रथम अंक में नियोगी द्वारा प्रस्तुत 'गांव के गरीब किसान साथियों से अपील' से साभार उद्धरित।)

एफ़ 16-17, रामा आर्केड, ई-8 गुलमोहर, भोपाल 462 039
फोन -(0755) 256 0037; ईमेल - shaheedniyogipustakalaya@gmail.com

सहयोग राशि : ₹ 10/-

शहीद नियोगी विचार श्रृंखला क्र. 1

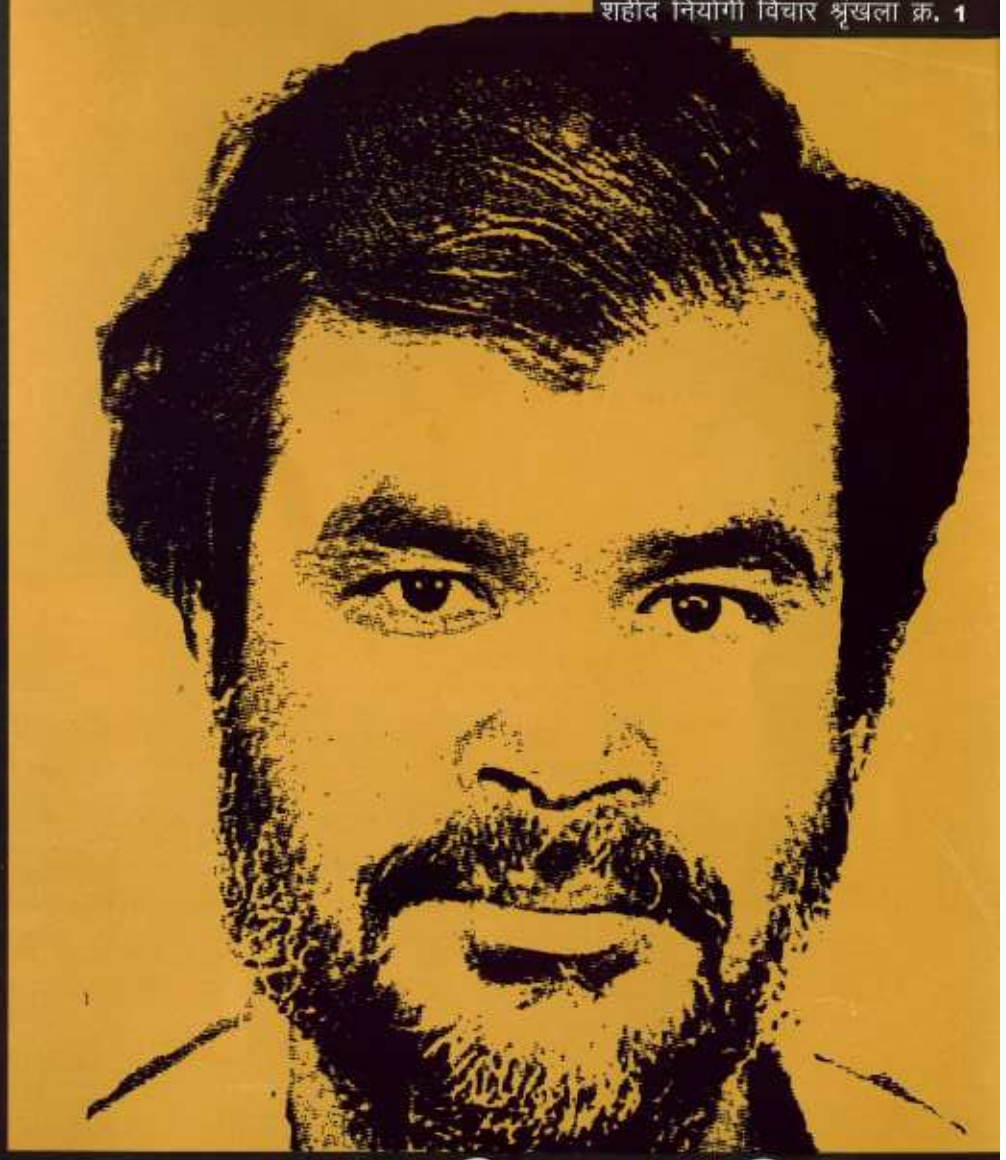

बदलाव की राजनीति
और
संघर्ष–निर्माण का दर्शन

नियोगी शहादत दिवस, 28 सितम्बर 2012
शहीद शंकर गुहा नियोगी पुस्तकालय एवं सांस्कृतिक केंद्र
भोपाल

क्रांतिकारी ट्रेड यूनियन की जरूरत पर

"आज सारे देश में आंदोलन की बड़ी–बड़ी लहरें उठ रही हैं और व्यवस्था की बुनियाद पर चरम आघात कर रही हैं। क्या ये लहरें व्यवस्था को ध्वस्त कर पायेंगी? या यह व्यवस्था आंदोलन को कुचल डालेगी? इसका निर्णय अभी होने को है। हमारा कहना है कि अगर लहरों की बागडोर सृष्टि के देवता उत्पादक वर्ग के हाथ में रहेगी, तो वर्तमान व्यवस्था ध्वस्त होगी और नयी व्यवस्था कि सृष्टि होगी। और अगर यह लहरों की बागडोर अनुत्पादक पूंजीपति वर्ग या निम्न पूंजीपति वर्ग के हाथ में रहेगी तो व्यवस्था बरकरार रहेगी। जनवाद ध्वस्त होगा, भूख की काली छाया देश में फैलती रहेगी एवं उत्पादक वर्ग कमजोर होता जायेगा।

उत्पादक वर्ग की स्थिति मजबूत करने के लिए ही क्रांतिकारी ट्रेड यूनियन की जरूरत है। उसी जरूरत कि पूर्ती के लिए जगह–जगह वैज्ञानिक प्रयोग हो रहे हैं। हम भी छत्तीसगढ़ में कुछ प्रयोग कर रहे हैं।"

(नवम्बर 1982 में 'अखिल भारतीय इस्पात मजदूर समन्वय समिति' की बोकारो में आयोजित बैठक के लिए तैयार किये गये नियोगी के बयान से उद्धरित एक अंश।)

शहीद नियोगी विचार श्रृंखला क्र. 1

बदलाव की राजनीति और संघर्ष-निर्माण का दर्शन

नियोगी शहादत दिवस, 28 सितंबर 2012

शहीद शंकर गुहा नियोगी पुस्तकालय एवं सांस्कृतिक केंद्र
भोपाल

बदलाव की राजनीति और संघर्ष-निर्माण का दर्शन

साभार – **'संघर्ष और निर्माण', सितंबर 1993**
संपादन – अनिल सद्गोपाल एवं श्याम बहादुर 'नम्र', छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा, दल्ली राजहरा, जिला दुर्ग, छत्तीसगढ़ के लिए राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित (उद्धरित पृ. सं. : 94, 165–66, 202, 254, 264, 274, 275, 285, 306, 321, 336, 647–659)।

आवरण एवं डिज़ाईन – कनक शशि

टाइपिंग – शालिनी सोलंकी

प्रकाशन – शहीद शंकर गुहा नियोगी पुस्तकालय एवं सांस्कृतिक केंद्र
(कमला सद्गोपाल पब्लिक ट्रस्ट द्वारा संचालित)
एफ़ 16–17, रामा आर्केड, ई–8 गुलमोहर, भोपाल 462 039
फोन : 0755-2560037; ईमेल - shaheedniyogipustakalaya@gmail.com

प्रथम संस्करण – सितंबर 2012 (1,000 प्रतियां)

मुद्रण – राजकमल ऑफ़सेट प्रिंटर्स
15–सी, सेक्टर–जी, जे. के. रोड,
गोविंदपुरा, भोपाल 462 021

सहयोग राशि – दस रुपए मात्र

इस पुस्तिका में छपी सामग्री का सामाजिक परिवर्तन के उद्देश्य से गैर–व्यावसायिक उपयोग करने की पूरी छूट है। अपेक्षा केवल यह है कि ऐसा करते समय सामग्री के स्रोत का पृष्ठ संख्या सहित पूरा जिक्र किया जाए और हमें सूचित किया जाए।

विषयसूची

विवरण	पृष्ठ संख्या
1. भूमिका	**04**
2. वामपंथ की तीनों धाराओं से अलग, एक चौथी धारा – ए. के. राय	**05**
3. जिसने जनता के पैरों के लिए जूते बनाना सीखा – अमित सेनगुप्ता	**12**
4. संघर्ष-निर्माण इंसान के दो पैरों की तरह – गणेशराम चौधरी	**17**
5. संघर्ष और निर्माण – अनिल सद्गोपाल	**19**

भूमिका

2 मार्च 1977 का दिन। तत्कालीन मध्य प्रदेश (वर्तमान छत्तीसगढ़) के जिला दुर्ग के दल्ली राजहरा में स्थित सार्वजनिक क्षेत्र के भिलाई स्टील प्लांट (बी. एस.पी.) की बंधक लोहा पत्थर खदानों के 10,000 ठेका मजदूरों ने स्थापित ट्रेड यूनियनों के खिलाफ विद्रोह कर दिया। स्थानीय नेतृत्व ने नजदीक की दानीटोला क्वार्टज़ाइट खदान में काम कर रहे मजदूर शंकर गुहा नियोगी को आंदोलन की मदद के लिए दल्ली राजहरा बुलाकर छत्तीसगढ़ माईन्स श्रमिक संघ (सी.एम.एस.एस.) का गठन कर लिया। तीन माह बाद बी.एस.पी. प्रबंधन, खदान ठेकेदार और प्रशासन के दबाव में पुलिस ने मजदूरों पर दो बार गोली चलाई जिसमें एक महिला मजदूर, व एक बच्चे सहित 11 मजदूर मारे गए। अगले 14 सालों के दौरान न केवल देश वरन् पूरी दुनिया एक ऐतिहासिक मजदूर आंदोलन की गवाह बनी।

नियोगी के नेतृत्व में लगभग 20,000 मजदूर छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा (छमुमो) के लाल–हरे झंडे के तहत संगठित हुए। मजदूरों ने दिहाड़ी की लड़ाई को इज्जत की लड़ाई में बदलना सीखा और अर्थवाद से परे हटकर सामाजिक व राजनीतिक बदलाव की लड़ाई लड़ी। एक के बाद एक निराले कदम उठाए गए – शराब बंदी आंदोलन, शहीद अस्पताल व शहीद स्कूलों का निर्माण, सांस्कृतिक समूह व महिला मोर्चे का गठन, 1857 में शहीद हुए वीर नारायण सिंह को मजदूरों के प्रेरणा स्रोत के रूप में स्थापित करना, मशीनीकरण रोकने के लिए अर्द्ध–मशीनीकरण की लड़ाई, पर्यावरण की लड़ाई, देशभर के जनांदोलनों को सक्रिय समर्थन देना और अंततः छत्तीसगढ़ के विकास के लिए विश्व बैंक के मॉडल के खिलाफ जनवादी व देशप्रेमी वैकल्पिक मॉडल खड़ा करना। 1990 में इस आंदोलन से भिलाई क्षेत्र के करीब एक लाख मजदूर जुड़ गए। इसीलिए जरूरी हो गया था कि नियोगी की हत्या करवाई जाए जिसको भिलाई क्षेत्र के पूंजीपतियों ने 28 सितंबर 1991 को अंजाम दे दिया।

नियोगी की भारत के नवनिर्माण की बहुआयामी दृष्टि ने बुनियाद डाली 'संघर्ष और निर्माण' के दर्शन की जो दर्शन होने के साथ–साथ बदलाव की राजनीति का क्रांतिकारी शिक्षाशास्त्र भी है। इसी की एक तस्वीर आपके सामने पूर्वप्रकाशित 'संघर्ष और निर्माण' नामक पुस्तक (सितंबर 1993) से उद्धरित चार आलेखों के जरिए पेश की जा रही है। संभवतः इनमें से कोई भी आलेख पूरी बात नहीं कहता लेकिन उन्हें जोड़ने पर पूरी तस्वीर जरूर बन जाती है। □

वामपंथ की तीनों धाराओं से अलग, एक चौथी धारा

– ए. के. राय[1]

शंकर गुहा नियोगी जब जीवित थे तब वे नेता रहे, लेकिन मृत्यु के बाद एक धारा बन गए। उस धारा का नाम है 'संघर्ष से निर्माण'। यह एक अनोखा संगम, जो एक निर्बल समाज का संबल। दिल्ली भारत की राजधानी, लेकिन दल्ली राजहरा आज राजनीति का नया तीर्थ है। मध्य प्रदेश के बीच लोहा खदानों से लाल एक इलाका, भारत के भूगोल ने जिसका कभी ख्याल नहीं किया। आज कितने लोग वहां पहुंच रहे हैं! इसके लिए काफी कीमत देनी पड़ी है। पंद्रह साल पहले ग्यारह श्रमिकों के बलिदान से जिस यात्रा की शुरूआत हुई, वह आज राजनांदगांव होते हुए पंद्रह श्रमिकों की शहादत के साथ भिलाई पहुंची है। लेकिन दिल्ली अभी दूर है। दल्ली से दिल्ली, इस धारा के प्रवाह में 27 सितंबर 1991 की रात में शंकर गुहा नियोगी भी मिला दिए गए। इसलिए इस धारा का संदेश आज सभी को आकर्षित कर रहा है। यह कोई बीते हुए जीवन का व्याख्यान नहीं, एक आनेवाले जमाने का जयगान है। नींद तोड़ने का आह्वान, जो सोए हुए जमात को जगाता है, और उन तमाम लोगों की नींद छीन लेता है, जिन्होंने सोए हुए एक जीवन को हमेशा के लिए नींद में ढकेल दिया था। मृत शंकर गुहा नियोगी, जीवित शंकर गुहा नियोगी से ज्यादा बलवान है। आज दल्ली इसलिए आनेवाले जमाने का दिल्ली है।

सन् 1971 से 1991 तक, बीस साल की दुरूह यात्रा। इस बीच कितनी घटनाएं। कितनी उठापटक दुनिया में। भारत में भी। इतिहास के उलटे रथ ने कितने स्वप्नों को तोड़ डाला। कितनी आशाओं का अंत किया। समाजवादी विश्व तथा सोवियत संघ के विघटन के बाद जैसे तमाम मूल्य ही उलट गए। उपयोगितावाद (प्रैगमैटिज़्म) के युग में आदर्शहीन विश्व ही आदर्श विश्व। आज स्वतंत्रता एक बोझ। निर्भरता अच्छी।

[1]मार्क्सिस्ट को–ऑर्डिनेशन कमेटी (धनबाद) के नेता एवं कोयला मजदूरों के जुझारू संगठक, प्रखर राजनीतिक विचारक व लेखक, धनबाद के पूर्व निर्दलीय सांसद।

आसान रास्ता ही सही रास्ता। सिर्फ रूस में ही येल्तसिन ने लेनिन को हटाकर नहीं रखा है, भारत में भी भिंडरावाला भगत सिंह को भगा रहा है, गोडसे गांधी को और अब राव नेहरू को। चारों ओर मनमोहन सिंह और डंकल साहब के डंके की आवाज। हर्षद मेहता, कृष्णमूर्ति की खबर। इस माहौल में शंकर गुहा नियोगी की जगह कहां? उनके कामों का भी क्या महत्व? लेकिन दिल्ली में 'राज' करनेवालों की राजनीति के विरुद्ध दल्ली में जो लोग काम करते हैं, उनकी राजनीति आज जोर बांध रही है। जीवित शंकर गुहा नियोगी ने जिसे ललकारा था, क्या मृत नियोगी उसे नेतृत्व दे सकेंगे?

शंकर ने अपने एक प्रकाशित हुए लेख में लिखा है – "मनुष्य की तरह समाज भी समय के साथ जवान होता है, उसमें भी बुढ़ापा आता है; एक समाज की मृत्यु के बाद नए समाज का जन्म होता है; भारतीय समाज आज **प्रौढ़त्व** के अंदर से गुजर रहा है।" यह कितना सही है, उसकी बहस आज नहीं। लेकिन यह सही है कि विकास काल के हिमयुग की तरह इतिहास में आदर्श का हिमयुग भी आता है। जब संसार बेसब्री से उष्णता का इंतजार करता है – कब बर्फ पिघलेगी और कब भगीरथ जटामुक्त गंगा को मैदान में ले आएगा। क्या शंकर वह भगीरथ था जिसका शुरू में ही अंत कर दिया गया? इसका जवाब भी आज नहीं। उस दिन की बात याद आती है। शंकरहीन दल्ली राजहरा की पहली सभा। खून और आंसू का संगम। **भाषाहीन हजारों लोग उस दिन भी आशाहीन नहीं थे।** पूर्व प्रधान मंत्री वी. पी. सिंह ने जब पूछा कि मदद में वे क्या कर सकते हैं, तब एक ही जवाब आया, "लड़ाई में साथ दीजिए। शंकर गुहा नियोगी मर गए, लेकिन लड़ाई नहीं मरनी चाहिए।" और हाल में भिलाई में पंद्रह श्रमिकों के बलिदान ने साबित कर दिया कि लड़ाई मरी नहीं। दमन लोगों को दबा नहीं सका। यह कौन–सा मंत्र है जो कठिन संकट में भी संयम खोने नहीं देता, दुःख में भी आशा और आत्मविश्वास को बरकरार रखता है? उससे भी बड़ी बात – **वह यदि दल्ली में काम कर सकता था तो दिल्ली में क्यों नहीं,** जहां चारों ओर संकट के बादल हैं?

जिस संक्रमण के रास्ते में बंगाल के दिनाजपुर जिले के धीरेश[2] मध्य प्रदेश के छत्तीसगढ़ इलाके में नियोगी बने, उसके हर कदम की अलग पहचान शायद आज संभव नहीं। लेकिन यह कुछ असम्बद्ध घटनाओं की गाथा नहीं थी। इसमें भी एक योग सूत्र रहा, दिशा रही, और एक परिणति भी। **देश के कम्युनिस्ट आंदोलन की तीनों धाराओं में से गुजर कर नियोगी एक चौथी धारा बने।** और यह धारा थी समन्वय की। **हर प्रयोग के सकारात्मक पहलुओं को चुनकर एक नए मॉडल की रचना करना चाहा था शंकर ने।** और वह भी लोहा खदानों की लाल मिट्टी पर और भारत के सबसे कमजोर और विकास से दूर समाज को लेकर। यह मॉडल दो पैरों पर खड़ा था – एक संघर्ष, दूसरा निर्माण। श्रमिकों की मजदूरी की लड़ाई, बेरोजगारों की रोजी की लड़ाई, पूंजीपतियों के शोषण के विरुद्ध लड़ाई, सरकार तथा शोषक वर्ग के दमन के विरुद्ध लड़ाई आदि के साथ जुड़ गए अस्पताल, स्कूल, सहकारी समिति एवं पर्यावरण संरक्षण के रचनात्मक कार्यक्रम। व्यस्त रहते हुए भी शंकर कभी अध्ययन, से दूर नहीं रहे और कोई विकल्प तैयार करे बगैर आंदोलन में कभी उतरे नहीं। विदेश से मशीन लाकर आधुनिकीकरण के नाम पर जब 8,000 मजदूरों की छंटनी की योजना बनी तब लोहा खदानों में शंकर बगावत का बिगुल फूंक चुके थे, लेकिन साथ–ही–साथ भारत की स्थिति में उपयोगी मशीन और श्रमशक्ति को मिलाकर उन्होंने 'अर्द्ध–मशीनीकरण' की एक वैकल्पिक स्कीम भी पेश की थी जिसने इस्पात मंत्रालय को भी आश्चर्यचकित कर दिया और अंत में यही वहां लागू हुई। मशीनीकरण की समस्या को शंकर एक वर्ग दृष्टिकोण के साथ देखते थे। **मशीनीकरण या तथाकथित आधुनिकीकरण, सिर्फ रोजगार को ही संकुचित नहीं करता है, बल्कि एक विशेष वर्ग के हाथ से रोजगार छीनता है।** और वह वर्ग है समाज का कमजोर वर्ग – हरिजन, आदिवासी तथा महिला। इसलिए मशीन–आधारित आधुनिक खदान या कारखाने में हरिजन, आदिवासी तथा महिला की संख्या नहीं के बराबर रहती है। विकास का यह रास्ता कितना सही है, जो दुर्बल को और दुर्बल बना देता है?

[2]शंकर गुहा नियोगी का बचपन का नाम।

बहुमुखी गतिविधियों के बीच में भी जिस मूल दिशा से शंकर गुहा नियोगी कभी भटके नहीं, वह है **मजदूर वर्ग का नेतृत्व और समाज में मार्क्सवाद की स्थापना**। आज प्रतिष्ठित ट्रेड यूनियनों में भी मजदूर वर्ग का नेतृत्व नहीं है, न ही नेतृत्व की मजदूर वर्ग पर पकड़ है। मार्क्सवादी दर्शन भी अभी तक बाबू संस्कृति का बेड़ा पार कर, सही जमीन में जड़ें नहीं घुसा पाया। संक्षेप में शंकर का लक्ष्य था **मार्क्सवाद का भारतीयकरण** जिसकी जरूरत इतने दिनों के बाद भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सी. पी. आई.) ने अपनी दलील में स्वीकार की है। इस संदर्भ में वर्ग संघर्ष और सांस्कृतिक क्रांति का एक रूप 'संघर्ष और निमार्ण' का कार्यक्रम है। **चीन में जो चीज माओ ने क्रांति के बाद की थी – जात–पात व धर्म में विभाजित भारत में उसकी क्रांति लाने के लिए ही जरूरत है।** सामाजिक सुधार एक सांस्कृतिक क्रांति है, बशर्ते कि वह समाजवादी विचारों के साथ मजदूर वर्ग के नेतृत्व को प्रभावित करती रहे। इसलिए यूनियन शंकर गुहा नियोगी के लिए **राहत तथा सुविधा देने की दुकान नहीं, ज्ञान तथा चेतना देने का स्कूल था।** मजदूर वर्ग समाज को बदल डालने की शक्ति है और यूनियन का काम है उसे उस रूप में तैयार करना। एक रचना में नियोगी ने लिखा था, "अर्थवाद का अंधकार नहीं, आर्थिक लड़ाई के साथ सामाजिक मुक्ति की रोशनी चाहिए। चाहिए स्वाभिमानी मजदूर वर्ग की प्रतिष्ठा जो वोट के लिए तिरंगा और पेट के लिए लाल झंडा की अवसरवादिता से मुक्त होंगे।" इसी के अंदर से पनपेगा क्रांतिकारी ट्रेड यूनियन जिसकी एक छवि 'छत्तीसगढ़ माईन्स श्रमिक संघ' (सी. एम. एस. एस.) के रूप में दल्ली राजहरा में हमें मिलती है। यहां पर भी शंकर हम सबके लिए एक मॉडल छोड़कर गए हैं जो भारत के किसी भी यूनियन से अलग, लेकिन सभी यूनियनों के लिए शिक्षाप्रद है।

नियोगी के अनुसार क्रांतिकारी ट्रेड यूनियन के लिए पहली जरूरत नेतृत्व की एक समग्र दृष्टि है। यदि समाज में बदलाव लाना ही ट्रेड यूनियन आंदोलन का लक्ष्य है, तो समाज के तमाम अंतर्द्वंद्वों के बारे में ठोस जानकारी तथा हर स्तर पर उसकी एक भूमिका होनी चाहिए। किसी भी समस्या का छोटा पहलू भी कभी बड़ा बन कर खड़ा हो जाता है। भारत में क्रांति का सवाल कोई एकांकी नाटक नहीं, इसलिए एकांगी

दृष्टिकोण लेकर इस विशाल समाज की जटिल प्रक्रियाओं को समझना संभव नहीं है। भारत की ही तरह **उपनिवेशोत्तर देशों[3] में जहां भ्रष्टाचार का बोलबाला है वहां नैतिक क्रांति भी एक विशेष महत्व रखती है** तथा सामाजिक सुधार का केंद्र बिंदु है। इसलिए आर्थिक लड़ाई के साथ–साथ शंकर ने शराबबंदी की लड़ाई शुरू की थी जिसने अंत में उस इलाके के दारू के तमाम ठेकेदारों को उनका दुश्मन बना दिया। इसी रूप में सूदखोरी तथा महाजनों के विरुद्ध जेहाद छेड़ा गया। इतना ही नहीं, जहां सामाजिक तथा क्षेत्रीय विकास की विषमता ही आर्थिक तथा राजनीतिक शोषण की जड़ है, वहां उसके विरोध की लड़ाई में मजदूर वर्ग को अगुवाई करना है। इसीलिए लोहा खदानों के मजदूरों के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ के पिछड़े समाज के आत्मसम्मान तथा स्वायत्तता के सवाल पर 'छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा' (छमुमो) बना। इस रूप में वर्ग संघर्ष के साथ सामाजिक उत्थान के संघर्ष ने मिलकर 'भूपाल में भूचाल' पैदा किया। दल्ली राजहरा में ट्रेड यूनियनों के जिस मॉडल का शंकर गुहा नियोगी ने सृजन किया उसने **मजदूरों को सिर्फ मांग करना ही नहीं सिखाया, बल्कि कुछ करने के लिए भी प्रेरित किया।** और यूनियन ने स्कूल, अस्पताल, सहकारी समिति आदि बनाकर और पर्यावरण संरक्षण करके दिखाया कि निजी क्षेत्र तथा सरकारी क्षेत्र, दोनों से ही मजदूर क्षेत्र बेहतर है। सिर्फ इतना ही नहीं – दल्ली राजहरा की यूनियन ने इतिहास की भी खोज शुरू की और प्रकाश में आई अंग्रेजों के विरुद्ध छत्तीसगढ़ के वीर नारायण सिंह की लड़ाई और शहादत। आज वीर नारायण सिंह एक महान शहीद के रूप में सरकार द्वारा भी माने गए हैं, जिनकी मूर्ति भी स्थापित हुई, जिनके शहादत दिवस में माला चढ़ाने के लिए भोपाल से मुख्य मंत्री रायपुर आ जाते हैं। लेकिन **इस महान इतिहास की खोज विश्वविद्यालय के विद्वानों ने नहीं की बल्कि खदान मजदूरों की एक यूनियन ने की।** भारत में इस प्रकार की कोई और मिसाल है क्या?

नियोगी के विचार में दारू व्यापार, मशीनीकरण, और बहुराष्ट्रीय कंपनियों की घुसपैठ के अंदर एक संबंध है और इसके साथ यदि पांच सितारा होटल का उपभोक्तावाद जुड़ जाए तो भारत आजादी खो बैठेगा। आज

[3]वे देश जो पहले कभी किसी अन्य देश के उपनिवेश थे, यानी 'पोस्ट–कॉलोनियल' देश।

जिस स्थिति में हम पहुंच रहे हैं, वहां खुल्लमखुल्ला बोला जा रहा है कि गुलामी द्वारा गरीबी दूर हो सकती है। **विदेशी पूंजी आज विदेशोन्मुखी (विदेश की ओर झुकी हुई) मानसिकता की जड़ है जो सिर्फ भ्रष्टाचार को ही फैलाकर समाज को प्रदूषित नहीं कर रही है, बल्कि देशभक्ति को भी नष्ट कर राष्ट्र को ही खतरे में डाल रही है।** इस दिशा की ही देन है सांप्रदायिकता, अलगाववाद व उग्रवाद। यह कोई आकस्मिक संयोग नहीं है कि अमृतसर के स्वर्णमंदिर में अमरीकी राजदूत को आमंत्रित करने के वक्त कहा गया था कि अमरीका को खालिस्तान का समर्थन करना चाहिए, क्योंकि खालिस्तान में विदेशी पूंजी निर्बाध खेल पाएगी, चूंकि वे मुक्त व्यापार की नीति में विश्वास रखते हैं। शंकर गुहा नियोगी ने लोकसंस्कृति को पूर्णतः जीवित कर विदेशी अपसंस्कृति को रोकने के लिए मजदूर वर्ग को संगठित किया था। अंग्रेजी स्कूल, टाई और मिनीस्कर्ट की 'मम्मी, डैडी, आंटी' वाली अपसंस्कृति, डिसुम–डिसुम नाच के अंदर से जो बौद्धिक अफीम इस देश में आयात हो रही है, वह परिवर्तन की राजनीति की सबसे बड़ी दुश्मन है जो आज मजदूर वर्ग के अंदर भी घुस रही है। इस नैतिक प्रदूषण को शंकर ने कभी क्षमा नहीं किया। शंकर गुहा नियोगी के अंदर इसलिए हम गोर्की के पावेल व्लासव[4] को पाते हैं जो कारखाने में कठोर श्रम करने के बाद भी देर रात तक पढ़ते थे और साथियों द्वारा वोदका (रूसी शराब) चाहने पर, सिर्फ चाय का इंतजाम करने को कहकर अपनी मां को भी चिंतित कर देते थे, क्योंकि इस स्तर के संयम से मां परिचित नहीं थी। सोवियत संघ के विघटन के पहले वोदका का आधिक्य इसके टूटने का लक्षण था, जो शंकर द्वारा वर्ग संघर्ष के साथ नैतिक सुधार आंदोलन को जोड़ने के ऐतिहासिक औचित्य को उजागर करता है। चरित्रहीन समाज समाजवाद की रक्षा नहीं कर सकता और आजादी को भी नहीं बचा सकता। इसलिए विदेशी पूंजी, पांच सितारा होटल, बार आदि समाज को चरित्रहीन बनाने में लगे हुए हैं। चाहे यह रूस में हो चाहे भारत में।

नियोगी एक गांधीवादी थे, या नक्सवादी या दत्ता सामंत की तरह सिर्फ एक व्यक्तिवादी श्रमिक नेता? परंपरागत कसौटी से इसका जवाब आसान

[4]रूसी उपन्यासकार मैक्सिम गोर्की के प्रसिद्ध उपन्यास 'मां' का नायक।

नहीं है। यहां पर भी शंकर भारत की राजनीति में एक चुनौती बनकर रहा। लेकिन सबसे बड़ा सवाल जो वह छोड़कर गया वह है – **क्या गांधीवादी आचार के साथ मार्क्सवादी विचार का समन्वय** संभव है? शंकर ने एक ही मंच पर गांधीवादी, नक्सलवादी, समाजवादी, पर्यावरणवादी आदि सभी को बैठाकर साबित कर दिया कि यह संभव है। यह महान समन्वय भारत की राजनीति में शंकर की अनोखी देन है। **दक्षिण और वाम के विभाजन के पहले अच्छाई और बुराई का विभाजन चाहिए** जिसने भारत की राजनीति में मिलावट की एक नई समस्या पैदा की है। जनमुखी, श्रममुखी, सहयोगमुखी दिशा एक ओर, सत्तामुखी, धनमुखी, स्वार्थमुखी दिशा दूसरी ओर। इन दोनों के बीच हमें चुनना है और इसमें ही शंकर ने सभी को दुश्मन बना लिया। कितनी पार्टियों ने भोपाल से राज किया। कांग्रेस, जनता, भाजपा। सभी से लड़ना पड़ा। कितनी यूनियनें भिलाई में रहीं। सभी ने विरोध किया। जीवन भर शंकर को लड़ना पड़ा – सभी सरकारों से, सभी पार्टियों से। लेकिन कोई उनको पराजित नहीं कर पाया। मृत्यु के बाद भी शंकर गुहा नियोगी अपराजित है, **जिसने दल्ली राजहरा की छोटी–सी प्रयोगशाला को बदलाव की सही राजनीति की नई दिल्ली में बदल दिया।**

(सितंबर 1992; मूल हिन्दी लेख भाषाई परिमार्जन के साथ)

"मेरे दो बेटे हैं। मेरा एक बेटा कारखाने में कार्य करने जाता है तो वे उसके समस्त अधिकारों को छीनकर अमानवीय शोषण करते हैं। जब वह उस शोषक के खिलाफ सीना तानकर खड़ा होता है, यूनियन बनाकर इंकलाब का नारा लगाता है, अपने हक की मांग करता है, तब मेरे दूसरे बेरोजगार बेटे के हाथ में चाकू थमा देते हैं और कहते हैं, 'जा, अपने भाई पर चाकू चलाकर आ जा।' इस प्रकार इंसानियत के दुश्मन ये लालची उद्योगपति मेरे दोनों बेटों का शोषण करते हैं।"

– शहीद शंकर गुहा नियोगी
भिलाई की अंतिम आम सभा के भाषण से (फौजीनगर, 28 अगस्त 1991)

जिसने जनता के पैरों के लिए जूते बनाना सीखा

– अमित सेनगुप्ता[5]

नियोगी से जब मेरी पहली मुलाकात हुई तब हमारी न तो छत्तीसगढ़ के संगठन के बारे में बात हुई, न ही दिल्ली के मेरे मजदूर संगठन के बारे में। हम दोनों की बात हुई देश की तत्कालीन परिस्थिति के बारे में, देश के विभिन्न अंचलों के असमान विकास के बारे में और इन मुद्दों के परिप्रेक्ष्य में एक देशव्यापी संगठन बनाने के तरीकों के बारे में। नियोगी की प्रमुख चिंता थी कि ऐसा संगठन कैसे बनाया जाए जो समाज को बदल सके। शुरू से ही उनकी जनता में असर रखने वाले देश के विभिन्न प्रगतिशील संघर्षों व संगठनों को इकट्ठा करके एक देशव्यापी संगठन बनाने की इच्छा थी। यह इच्छा उनकी जितनी ज्यादा थी, उतना ही कम समय उनके पास था। इसका कारण था कि छत्तीसगढ़ आंदोलन में उनकी गहराई से भागीदारी थी, न केवल संगठन के काम बल्कि आम लोगों की व्यक्तिगत समस्याओं में भी। मैंने ऐसा कई बार देखा कि दो भाई या पड़ोसी जमीन या अन्य किसी मामले को लेकर नियोगी के पास चले आते थे, चूंकि इन लोगों का अदालत पर भरोसा नहीं था। वे सोचते थे कि अदालत में पैसा भी खर्च होगा और न्याय की भी कोई गारंटी नहीं होगी। इसके विपरीत नियोगी के पास जाने से खर्च भी नहीं होगा और न्याय की भी गारंटी होगी।

सिद्धांतों से अनुभव–जनित व्याख्या तक

सन् 1980 के शुरू में एक बार कुछ लोग नियोगी, राय दा (कामरेड ए. के. राय) और मुझसे देशव्यापी संगठन बनाने के बारे में बात करने दिल्ली आए। बातचीत का विषय था कि जिन लोगों का जनता के बीच काम और असर है उनको लेकर राष्ट्रीय स्तर पर संगठन कैसे बनाया

[5]पूर्व में दिल्ली के कपड़ा मजदूर ट्रेड यूनियन आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका; तत्कालीन 'दिल्ली मुक्ति मोर्चा' के संस्थापक; 'छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा' आंदोलन से जुड़े हुए और उसके 'नवां अंजोर' सांस्कृतिक दल के संस्थापक–सदस्य, संप्रति : दिल्ली में संगीत निर्देशन कार्य।

जाए। इन लोगों के चले जाने के बाद राय दा ने हम दोनों को समझाया कि ये लोग जो देश भर में घूम–घूमकर क्रांतिकारी संगठन बनाने चले हैं, उनके पास समय का अभाव नहीं है, चूंकि उनका अपना कोई जनाधार, जनता के बीच काम या जनता में असर नहीं है। इसलिए ये अगर अपने क्षेत्र में न भी रहें तो इनके काम का कोई नुकसान नहीं होगा। राय दा का कहना था कि इन लोगों के द्वारा प्रस्तुत आज की परिस्थिति की व्याख्या जनता को समझ में नहीं आएगी, क्योंकि ये केवल बने–बनाए किताबी सिद्धांत ही पेश कर रहे हैं, व्याख्या नहीं कर पा रहे हैं। बेहतर होगा कि हम अपने काम के साथ–साथ सिद्धांतों का अध्ययन भी करते जाएं और अपने दर्शन के आधार पर आज की परिस्थिति की सैद्धांतिक स्तर पर व्याख्या पेश करें। तब कहीं जाकर हमारी बात लोगों को समझ में आएगी और काम भी आगे बढ़ेगा।

मैंने कभी नियोगी को अड़ियल बनते नहीं देखा। वे प्रत्येक की बात व अनुभव सुनने–समझने की कोशिश करते थे, यानी उनमें अपना अनुभव दूसरों पर थोपने की प्रवृत्ति बिल्कुल नहीं थी। **वे यह जानते थे कि अलग–अलग जगहों पर चल रहे संघर्षों का अनुभव अलग–अलग होना स्वाभाविक है।** वे मार्क्सवाद के आधार पर इनका विश्लेषण करके हर अनुभव से सीखते थे।

वे अपने अनुभवों की सैद्धांतिक स्तर पर व्याख्या करने की कोशिश करते थे, यानी मार्क्सवाद के सिद्धांतों को अपने अनुभवों पर लागू करके उन्हें समझने–समझाने की कोशिश होती थी। वे इस प्रवृत्ति के खिलाफ थे कि पहले घर में बैठकर जूता बनाया जाए और फिर जाकर जनता के पैर में उस जूते को फिट करने की कोशिश की जाए। और अगर फिर भी फिट न हो तो पैर काटकर भी फिट किया जाए। **इस प्रवृत्ति से एकदम हटकर उन्होंने पहले से प्राप्त सिद्धांतों के आधार पर जूते बनाने का तौर–तरीका सीखा, फिर वे जनता के बीच में गए, जनता के पैर का नाप लिया और तब जाकर जूता बनाया। यह जूता जनता के पैर में फिट हो गया और जनता ने इसे अपना भी लिया।** नियोगी ने इसी तरीके से छत्तीसगढ़ की हर समस्या का हल खोजने की कोशिश की। उन्होंने अपने काम में जो भी सफलता हासिल की, उसकी कुंजी यही तरीका था।

देशव्यापी संगठन के लिए एक पहल

नियोगी की ही पहल पर दिसम्बर 1980 में पटना में 'राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा' का गठन हुआ। इसमें जिन संगठनों ने हिस्सेदारी की वे थे – छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा, झारखंड मुक्ति मोर्चा, दिल्ली मुक्ति मोर्चा, मार्क्सिस्ट को–ऑर्डिनेशन (धनबाद) और कलकत्ता का एक संगठन (नाम याद नहीं)। ये संगठन अपने क्षेत्र में इतने व्यस्त रहते थे कि बाद में कभी 'राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा' की औपचारिक बैठक नहीं हो पाई। लेकिन अलग–अलग जगहों में अन्य संगठनों के साथ औपचारिक बैठकों का सिलसिला चलता रहा।

विकल्प की राजनीति

नियोगी अपने–आप को कभी भी विरोध करने वाला या विपक्ष का नहीं मानते थे। उनका कहना था, "हम सत्ता में नहीं हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि हम विरोधी या विपक्ष के हैं। विपक्ष वाला सुनकर लगता है कि हमारा कार्यक्रम ही विरोध करना है। **जिसका कार्यक्रम मात्र विरोध करना ही है, वह देश और समाज के लिए क्या कर सकता है?** हमें विपक्ष वाला या विरोधी करार देकर शासक वर्ग जानबूझकर गलतफहमी में रखना चाहता है। **हम अपने–आपको विपक्ष ('ओपोज़िशन') नहीं, वरन् विकल्प ('प्रोपोज़िशन') वाला समझते हैं।** इसलिए हम हर समस्या का हल विकल्प के माध्यम से देने की कोशिश करते हैं।" इसी बात को आगे बढ़ाते हुए वे कहते थे, "हम जानते हैं कि जो मेहनतकश जनता दुनिया की हर चीज का उत्पादन करती है, उसके लिए अस्पताल, स्कूल, गैरेज व ट्रेनिंग सेंटर आदि तथा नए समाज को बनाना या चलाना कोई मुश्किल काम नहीं है। इसीलिए हम रचनात्मक यानी निर्माण के काम करना चाहते हैं।"

संघर्ष और निर्माण

इसी सिलसिले में संघर्ष–निर्माण की अवधारणा को समझाते हुए वे कहा करते थे, 'संघर्ष के साथ–साथ निर्माण के काम को हम उस दर्जे तक ले आना चाहते हैं जहां शासक वर्ग के द्वारा किया गया या करवाया गया हर निर्माण जनता के लिए निरर्थक और गैर–जरूरी हो जाएगा। **अतः**

हमारे निर्माण के सामने शासक वर्ग द्वारा किया गया निर्माण टिक नहीं पाएगा और ध्वस्त हो जाएगा। समाज को बदलने के लिए आज की परिस्थिति में संघर्ष का एक मुख्य हथियार है – निर्माण। संघर्ष व निर्माण एक ही चीज हैं। जैसे इंसान को चलने के लिए दो पैरों की जरूरत है, ऐसे ही हमारे संगठन के दो पैरों में से एक है संघर्ष और दूसरा है निर्माण। जिस प्रकार इंसान एक पैर से ठीक से नहीं चल सकता, ऐसे ही एक ही पैर से, यानी केवल संघर्ष या केवल निर्माण से, कोई भी संगठन ठीक से नहीं चल सकता। जैसे एक पैर से दो कदम आगे नहीं जाया जा सकता और एक–के–बाद–दूसरे पैर का तालमेल रखकर चलना पड़ता है, ठीक उसी प्रकार संघर्ष व निर्माण के बीच बराबर तालमेल रखते हुए, **एक कदम संघर्ष तो एक कदम निर्माण करते–करते आगे बढ़ना होगा।"**

ऐतिहासिक जरूरत

यह कहना शायद अतिशयोक्ति नहीं होगी कि नियोगी केवल छत्तीसगढ़ के विकास लिए ही नहीं, वरन् पूरे देश के विकास की जरूरत बनते जा रहे थे। उनके चिंतन व काम से गांधीवादियों से लेकर मार्क्सवादी विचारकों तक के लोग राजनीतिक सीख लेने लगे थे। मुझे स्वयं उनकी संघर्ष–निर्माण की अवधारणा के जरिए लेनिन की 'राज्य व क्रांति' पुस्तक को समझने में मदद मिली है। समाज की भावी दिशा तय करने और इतिहास को बदलने में कभी–कभी कोई खास नेता नितांत जरूरी दिखने लगता है। मैं इसी संदर्भ में इस सदी के मोड़ पर नियोगी की एक विशिष्ट ऐतिहासिक जरूरत मानता हूं। यही कारण है कि मुझे आज उनका न रहना बहुत खलता है।

घनिष्ठ रिश्तेदार की मृत्यु

नियोगी की मृत्यु के बाद जब मैं 29 सितम्बर 1991 को दल्ली राजहरा पहुंचा तो मैंने उनकी शवयात्रा में या अपने मकानों के छज्जों से शवयात्रा को देखते हुए, कम–से–कम दो लाख लोगों को रोते हुए पाया। इंदिरा गांधी या राजीव गांधी की मृत्यु के बाद भी बहुत लोग रोये होंगे, लेकिन इनमें से कितने लोग उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानते होंगे,

यह मुझे पता नहीं। पर मुझे यह पता है कि उस दिन नियोगी की मृत्यु पर जितने लोग रोये, वे सब उन्हें व्यक्तिगत रूप से अच्छी तरह जानते थे। जिस प्रकार लोग अपने मां–बाप, भाई–बहन जैसे सगों की मृत्यु पर फूट–फूटकर रोते हैं, उसी तरह उस दिन छत्तीसगढ़ के लोग बिलख रहे थे। छत्तीसगढ़ी रिवाज के अनुसार किसी नजदीकी रिश्तेदार की मृत्यु पर लोग सिर मुंडाते हैं। मैंने 30 सितंबर को सबेरे अकेले दल्ली राजहरा में ही कम–से–कम तीन हजार लोगों को सिर मुंडाये हुए पाया। आस–पास के गावों में भी बहुत–से लोगों ने यही किया था।

छत्तीसगढ़ का बगीचा

यूनियन दफ्तर के पीछे नियोगी ने जो बगीचा लगाया था, उसमें ऐसे भी बहुत से पेड़–पौधे लगे हैं, जो पहले कभी छत्तीसगढ़ में पैदा नहीं हुए। नियोगी ने देश के विभिन्न अंचलों से लाकर यहां अपने हाथों से नाना–प्रकार के बीज बोये। इन पौधों ने अब इस जमीन में अपनी जड़ें जमा ली हैं और यहां के स्थानीय पौधों के साथ मिलकर एक सुंदर बगीचा बन गया है। ठीक इसी तरह सारी दुनिया और अपने तजुर्बे से सीखते हुए **नियोगी ने संघर्ष–निर्माण के जरिए जो बीज पूरे छत्तीसगढ़ के बगीचे में बोये, उनकी भी जड़ें छत्तीसगढ़ की धरती को मजबूती से पकड़ चुकी हैं।** इन जड़ों को दुनिया की कोई भी ताकत उखाड़ नहीं सकती। कभी–कभी लगता है कि यूनियन दफ्तर के पीछे का वह सुंदर बगीचा पूरे छत्तीसगढ़ में संघर्ष–निर्माण के जरिए राजनीतिक बीज बोने का एक जबर्दस्त प्रयोग था। छत्तीसगढ़ के कई स्थानों में ये राजनीतिक बीज अंकुर बन कर दिखने लगे हैं, कहीं–कहीं बड़े होकर पौधे बन चुके हैं और कहीं–कहीं काफी बड़े होकर पेड़ बन चुके हैं जो अपनी छत्रछाया से छत्तीसगढ़ को शोषणरूपी गर्मी से बचाते हुए आगे ले जाएंगे और शोषणविहीन बनाएंगे।

(नवम्बर 1992)

———

संघर्ष-निर्माण इंसान के दो पैरों की तरह

– **गणेशराम चौधरी**[6]

नियोगी जी ने मजदूरों की बढ़ती हुई राजनैतिक चेतना के आधार पर विकल्पों के निर्माण के कार्यक्रम विशेष रूप से उठाए। **'संघर्ष और निर्माण' की राजनीति एक इंसान के खड़े होकर चलने की स्वाभाविक प्रवृत्ति के समान है। जैसे इंसान सिर्फ एक पैर से चल नहीं सकता, ठीक उसी तरह सिर्फ संघर्ष से ही मजदूर वर्ग सार्थक राजनीति नहीं कर सकता। दोनों पैरों से चलने का मतलब है कि हम एक सही दिशा में, सही ढंग से आगे बढ़ रहे हैं।**

'संघर्ष और निर्माण' की राजनीति के तहत हम जिस प्रक्रिया या ढांचे का विरोध करते हैं, उसकी जगह हमारी धारणाओं के आधार पर वैकल्पिक प्रक्रिया या ढांचे का भावी स्वरूप क्या होगा, यह हमें पहले से मालूम रहता है। इस विकल्प को खड़ा करने के पूर्व उसका वैज्ञानिक पद्धति से मंथन किया जाता है, फिर उसे ठोस रूप दिया जाता है एवं उसके संचालन अथवा उपयोग का अनुभव भी प्राप्त किया जाता है। इसमें हमें तत्कालीन व्यवस्थागत प्रक्रियाओं या ढांचों का तर्कसंगत विरोध करने में काफी मदद मिलती है। इस तरह **जब हम अपने वैकल्पिक सोच के आधार पर कुछ खड़ा करते हैं, तब पुराना ढांचा या तो दब जाता है अथवा ध्वस्त हो जाता है।** यह एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है और हमारे काम का सिद्धांत है।

नियोगीजी की विकल्प की राजनीति को समझने के लिए निम्नांकित उदाहरणों की चर्चा करना उपयोगी होगा –

पहले हम अस्पताल का सवाल लें। आम तौर पर अस्पताल सिर्फ बीमारी का इलाज करने के लिए बनाए जाते हैं। बीमारी पैदा ही न हो, इस

[6]छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा एवं छत्तीसगढ़ माइन्स श्रमिक संघ के उपाध्यक्ष; सन् 1984 तक दल्ली की खदानों में रेजिंग मजदूर।

सोच को अस्पतालों के लिए अपनाना और उस पर काम करना संभव नहीं हुआ है। परंतु हमारे शहीद अस्पताल में सिर्फ इलाज ही नहीं, वरन् बीमारी न होने का माहौल कैसे बने, कुपोषण का खतरा कैसे खत्म हो एवं स्वास्थ्य की जानकारी आम जनता तक कैसे पहुंचे, ऐसे सब प्रश्नों पर छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा (छमुमो) व शहीद अस्पताल साथ–साथ काम करते हैं, उन पर आंदोलन चलाते हैं। इसके अलावा राज्य प्रशासन एवं भिलाई स्टील प्लांट का प्रबंधन अपनी व्यवस्था में सुधार व विस्तार करने के लिए मजबूर हो जाता है। दल्ली राजहरा में यही हुआ। शहीद अस्पताल को देखकर भिलाई स्टील प्लांट (बी.एस.पी.) प्रबंधन ने अपने राजहरा अस्पताल का विस्तार किया और राज्य शासन ने यहीं एक नया अस्पताल बनाया। शहर के एक व्यवसायी ने भी एक अस्पताल खड़ा किया। इससे आम जनता को काफी राहत मिली और संगठन को नए संघर्षों के लिए प्रेरणा मिली।

स्कूल बनाने के संदर्भ में भी जब मजदूरों ने अपने शहीद स्कूल बनाए, तो राज्य शासन एवं प्रबंधन भी इस होड़ में शामिल हो गए। कई नए स्कूल बने। इस प्रकार निर्माण से हमारे आंदोलन को बल मिला और प्रशासनिक अधिकारियों को काम करने के लिए मजबूर होना पड़ा। **मजदूरों को भी अपनी व्यवस्था को चलाने और उसमें आनेवाली समस्याओं का निराकरण करने का लगातार नया अनुभव प्राप्त हुआ।**

इसी प्रकार रोजगार, तकनालॉजी और संस्कृति के मुद्दों पर भी विकल्पों की खोज शुरू हुई। इससे मजदूरों के इरादे पक्के हुए और संघर्ष को नए–नए आयाम मिले।

(नवंबर 1992)

"किसी भी राजसत्ता को समाप्त करने के लिए पहले उसे विचारधारात्मक रूप से समाप्त करना चाहिए, तत्पश्चात राजनीतिक रूप से समाप्त किया जा सकता है।"

– शहीद शंकर गुहा नियोगी

संघर्ष और निर्माण

– **डॉ. अनिल सद्गोपाल**[7]

आज नियोगी जिस नई राजनीतिक धारा का स्रोत माने जाते हैं उसका सारतत्व है 'संघर्ष और निर्माण'। सामाजिक विकास के विचारक्रम में 'संघर्ष और निर्माण' का दर्शन ताजी हवा का झोंका बनकर आया है।

सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था में गुणात्मक परिवर्तन हेतु जन आंदोलन की निर्णायक भूमिका तो क्रांतिकारी बदलाव की राजनीति में एक लंबे अर्से से स्वीकारी जा चुकी है। परंतु छत्तीसगढ़ आंदोलन ने इसमें जो नया आयाम जोड़ा है, वह है आंदोलन में 'संघर्ष और निर्माण' के अभिन्न रिश्ते का सिद्धांत। इस आंदोलन ने दिखाया है कि मजदूर वर्ग किस प्रकार जनसंघर्ष की लहरों की ताल के साथ ताल मिलाकर निर्माण करता है और ऐसा करने पर मजदूरों के मन में किस प्रकार नई सामाजिक व्यवस्था का भ्रूण अंकुरित होता है। शोषण–आधारित वर्तमान समाज की भ्रष्ट व सड़ी–गली व्यवस्थाओं व संस्थानों के खिलाफ संघर्ष करते हुए मेहनतकश जनता एक वैकल्पिक समाज का सपना देखने लगती है। आमतौर पर आंदोलनों में इस सपने को विचारों के अमूर्त स्तर पर ही छोड़ दिया जाता है; इसी वजह से समय के साथ यह सपना धूमिल होने लगता है और देर तक संघर्ष का प्रेरणास्रोत नहीं बन पाता। इसके विपरीत छत्तीसगढ़ आंदोलन में जब संघर्ष में जुटे हुए मजदूर अपने सपनों को मूर्त रूप देते हैं – चाहे वह कितना ही सूक्ष्म क्यों न हो – तो यह निर्माण उनके आत्मविश्वास को कई गुना आगे बढ़ा देता है। उनका सपना भी आसमान छूने लगता है। तब उनके संघर्ष को नई प्रेरणा मिलती है और साथ–साथ संघर्ष के नए–नए दायरे बनने लगते हैं।

---

[7] वैज्ञानिक एवं शिक्षाविद् ; 'किशोर भारती' संस्था के जरिए जिला होशंगाबाद, म. प्र. में ग्रामीण विकास व शिक्षा का काम (1970–92); विगत 20 सालों से शिक्षा नीति में बदलाव और उस पर हो रहे नवउदारवादी हमलों को रोकने के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान में जुटे हुए; पूर्व डीन, शिक्षा संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय; संप्रति – सदस्य, अध्यक्ष मंडल, अखिल भारत शिक्षा अधिकार मंच।

शोषण पर टिके समाज में जो 'निर्माण' शासक वर्ग द्वारा करवाया जाता है, उसकी तुलना में मजदूरों द्वारा किए गए निर्माण का चरित्र कई मायनों में भिन्न होता है। जरा देखें तो कैसे –

1. इसकी उत्पत्ति शासक वर्ग द्वारा गरीब जनता के प्रति दिखाई जानेवाली दया से नहीं, वरन् संघर्ष से उपजी जुझारू ताकत से होती है।
2. इसके पीछे वर्तमान समाज की व्यवस्थाओं व संस्थानों के खिलाफ जनाक्रोश और उनको ध्वस्त करने की जोरदार चाह छिपी होती है।
3. इसका लक्ष्य होता है एक वैकल्पिक समाज का भ्रूण–रूपी प्रेरणादायक मॉडल खड़ा करना, न कि शोषणकारी तंत्र को बेबसी से ढोते रहना।
4. इसकी सृष्टि मजदूर वर्ग अपने सपनों की पूर्ति के लिए, अपने नियंत्रण में और अपने स्रोतों से करता है। दूसरे शब्दों में, **सृष्टा खुद ही इस सृष्टि का मालिक होता है।**

निर्माण के इस अनूठे चरित्र के अलावा हमें संघर्ष के साथ इसके द्वंद्वात्मक रिश्ते को भी समझना होगा। **जब संघर्ष के दौरान उपजे सपनों को साकार रूप देने के लिए मजदूर निर्माण करता/करती है तो इससे बने ठोस मॉडल के सहारे वैकल्पिक समाज के अगले सोपान को भी देखना संभव हो जाता है।** यानी, मजदूर के मन में नए सपने जागने लगते हैं। यही अर्थ है संघर्ष के नए दायरे बनने का। और फिर **इन नए सपनों की पूर्ति के लिए नए संघर्ष की प्रेरणा मिलती** है। इस प्रकार जहां एक तरफ संघर्ष की ताकत से निर्माण संभव होता है, वहीं दूसरी तरफ निर्माण से संघर्ष को नई ताकत मिलती है, नए मायने मिलते हैं। इसी अनुभव–जनित समझ के आधार पर छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा (छमुमो) ने यह नारा गढ़ा है –

"संघर्ष के लिए निर्माण,
निर्माण के लिए संघर्ष"

यही नारा आज छत्तीसगढ़ के हर संघर्षशील इंसान के दिल की आवाज

बनते जा रहा है।

दरअसल, **जहां सच्चा संघर्ष होगा, वहां निर्माण होना भी अवश्यंभावी है।** इसी तरह **जहां मजदूर वर्ग अपने सपनों की पूर्ति के लिए निर्माण करेगा, वहां संघर्ष का आगे बढ़ना भी लाज़मी है।** नियोगी के अनुसार संघर्ष और निर्माण हमारे दो पैरों की तरह है – दोनों के बीच तालमेल रखकर ही आगे बढ़ा जा सकता है।

छमुमो के लिए निर्माण का दायरा व्यापक है – इसमें समाज के विकास और पुनर्गठन का हर पहलू आता है। इसमें शामिल है इतिहास के अंधकार से क्रांतिकारी शहीदों और उनके नेतृत्व में चले जन संघर्षों की कहानियों को बाहर निकालकर जनता के सामने लाना। इस इतिहास से आज की पीढ़ी के नौजवान प्रेरणा लेते हैं। निर्माण का मतलब नई जन संस्कृति का सृजन करना भी है और इसके बल पर पूंजीवादी अपसंस्कृति को ध्वस्त करना भी। इसी उद्देश्य से छमुमो ने 'नवां अंजोर' लोक सांस्कृतिक मंच का गठन किया। छमुमो के शराबबंदी अभियान में भी वर्ग संघर्ष के जरिए वैकल्पिक सामाजिक व सांस्कृतिक रिश्तों का निर्माण करने का भ्रूण देखा जा सकता है। इसी निर्माण को करते हुए छमुमो ने **देशद्रोही उद्योग व कृषि नीतियों की जगह देशप्रेमी जनवादी विकास नीति की खोज शुरू की है।** इसी से प्रेरणा मिली है मजदूर–विरोधी पूर्ण मशीनीकरण के खिलाफ श्रम–आधारित अर्द्ध–मशीनीकरण को दल्ली की खदानों में स्थापित करने की। बात चाहे शहीद अस्पाल की हो, शहीद गैरेज एवं ट्रेनिंग वर्कशाप की हो या शहीद स्कूल की, इन सब में भावी समाज का भ्रूण पलता है। जनवादी साहित्य के प्रकाशन के लिए 'लोक साहित्य परिषद' का गठन, 'मितान' साप्ताहिक का प्रकाशन या नियोगी के अंतिम वर्षों में मजदूर संगठनों द्वारा मिलकर अपना अखबार निकालने की कोशिश में भी भावी समाज का भ्रूण देखा जा सकता है। ये सब प्रयास वर्तमान पीढ़ी को समाज के नवनिर्माण के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं। यह कोई छोटी बात नहीं है कि दल्ली राजहरा की पंडरदल्ली मजदूर बस्ती की मजदूर महिलाएं मिलकर दावा करती हैं कि, "जो 'शहीद अनुसूइया स्कूल' हम लोगों ने अपने पसीने की कमाई और खुद की प्रेरणा व मेहनत से

खड़ा किया है, वहां सरकारी वेतन पर काम करने वाला मास्टर भी आलस नहीं कर सकता, उसे मेहनत से पढ़ाना पड़ता है। पूरी बस्ती उस पर नजर रखे हुए है।" इस आत्मविश्वास का महत्व तभी समझा जा सकता है जब इस शहीद स्कूल को आप तेजी से छिन्न–भिन्न हो रही देश की स्कूली व्यवस्था के संदर्भ में रखकर देखें। यही फर्क है शासक वर्ग की दया (या उदारता) से किए गए निर्माण और जन संघर्ष से हुए नवनिर्माण में। अंततः मजदूरों द्वारा निर्मित शहीद स्कूलों से उपजे रचनात्मक माहौल के कारण भिलाई स्टील प्लांट के प्रबंधन व राज्य शासन को भी मजदूर बस्तियों में स्कूल बनवाने के लिए विवश होना पड़ा।

विकल्प के निर्माण की चाह छमुमो के उन प्रयासों में भी देखी जा सकती है जो छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश या देश के स्तर पर जनता के बीच सक्रिय संगठनों को एक मंच पर लाने के लिए किए गए, खासकर अस्सी के दशक के उत्तरार्ध में। ये आज की दिशाहीन भ्रष्ट राजनीति का विकल्प खड़ा करने के प्रयास थे। इनकी चाह भी विभिन्न क्षेत्रों में मेहनतकश जनता द्वारा किए जा रहे संघर्षों से अंकुरित हुई थी। इसीलिए शुरू से ही इन कोशिशों में एक वैकल्पिक विकास नीति बनाने पर जोर दिया गया ताकि **देश की संपदा का दोहन पर्यावरण के साथ संतुलन रखते हुए इस प्रकार हो कि शोषित जनता को न्याय मिल सके**। यही नहीं, विभिन्न संगठनों को एक साथ लाने की प्रक्रिया में भी, वर्तमान राजनैतिक दलों से हटकर, आपसी लोकतांत्रिक रिश्तों को एक वैकल्पिक आधार पर खड़ा करने की दृष्टि थी।

आइए, छत्तीसगढ़ आंदोलन द्वारा विकसित 'संघर्ष और निर्माण' की राजनीति को हम सूत्रबद्ध करें –

- जन संगठन का नेतृत्व मजदूर वर्ग के हाथों में होना।
- जन संघर्ष के बीच ही विकल्प की धारणा को मूर्त रूप देना।
- संघर्षशील जनता की सामूहिक व जुझारू शक्ति के आधार पर विकल्प की सृष्टि करना।
- विकल्प के संचालन की लगाम प्रत्यक्ष तौर पर मेहनतकश जनता

के हाथ में होना।

- इन विकल्पों का आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी होना। इनका मजदूरों के अपने स्रोतों पर आधारित होना, न कि बाहरी मदद या अनुदान पर।
- इन विकल्पों के माध्यम से मजदूर वर्ग द्वारा अन्य शोषित तबकों की सेवा करना।
- उस क्षेत्र में होने वाले अन्य जन संघर्षों में इन विकल्पों द्वारा आर्थिक, तकनीकी एवं अन्य समर्थन दिया जाना।
- इस निर्माण–कर्म से उभरने वाली नई–नई कल्पनाओं का नए–नए संघर्षों के लिए प्रेरणास्रोत बनना। इस प्रकार आगे बढ़े संघर्षों से एक बार फिर विकल्प के नए–नए सपनों का गढ़ा जाना। **संघर्ष–निर्माण का यही जीवंत, द्वंद्वात्मक रिश्ता आंदोलन को गतिशील बनाता है।**
- संघर्ष–निर्माण का यह रचनात्मक माहौल **नए इंसान गढ़ने की पाठशाला** बन जाता है।

नियोगी ने अपने एक लेख में लिखा है, **"हमें अर्थवाद का अंधकार नहीं, आर्थिक संघर्ष के साथ–साथ मुक्ति का आलोक भी चाहिए, एक इज्जतदार मजदूर वर्ग की प्रतिष्ठा चाहिए, नई संस्कृति की शुद्ध हवा चाहिए, एक क्रांतिकारी ट्रेड यूनियन चाहिए।"** यह संघर्ष–निर्माण का ही रास्ता रहा है जिस पर चलकर ये आंदोलन 'अर्थवाद के अंधकार' में बगैर दिशा खोए 'नई संस्कृति की शुद्ध हवा' बहा पाए हैं। और इसी रास्ते पर चलते हुए छत्तीसगढ़ के मजदूर–किसान मिलकर 'नए भारत के लिए नया छत्तीसगढ़' की कल्पना को साकार कर रहे हैं। यह रास्ता 'शहीदों के खून से सींचा' हुआ है। यह छत्तीसगढ़ के 'श्रमपुत्रों, श्रमपुत्रियों और भूमिपुत्रों, भूमिपुत्रियों' का सामूहिक रास्ता है।

'संघर्ष और निर्माण' के दर्शन को छत्तीसगढ़ की माटी में साकार रूप देकर ही नियोगी ने भारत के क्रांतिकारी नवनिर्माण का सपना देखा था। उनकी दृष्टि में **संघर्ष–निर्माण की राजनीति ही वह राजनीति होगी जिसके जरिए मेहनतकश जनता भारत का नवनिर्माण करेगी।** या यूं कहें कि संघर्ष–निर्माण का रिश्ता सामाजिक विकास की धुरी बन

जाएगा। इसीलिए जब नियोगी ने नए भारत का सपना देखा तो साथ में 'संघर्ष और निर्माण' की राजनीति का भी सपना देखा। इन दोनों सपनों के अंतर्सम्बंध को देख पाने में नियोगी ने अपनी विलक्षण राजनीतिक समझ का परिचय दिया। इन दोनों को छत्तीसगढ़ आंदोलन में जोड़कर नियोगी ने सामाजिक परिवर्तन का जो प्रेरणादायक और व्यावहारिक मॉडल पेश किया है, वह भारत की राजनीति में उनके ऐतिहासिक योगदान के रूप में याद किया जाएगा।

(नवंबर 1992)

"मार्क्सवाद एक सृजनात्मक विज्ञान है। मार्क्सवाद ही श्रमिक वर्ग एवं अन्य सभी मेहनतकश लोगों की मुक्ति का रास्ता है।"

"मैं केवल द्वंद्वात्मक भौतिकवाद में विश्वास रखता हूं। यह एक विज्ञान है। लेकिन विभिन्न देशों में इस विज्ञान का इस्तेमाल या इसका विश्लेषण कैसे होगा, यह वहां की तमाम सामाजिक–राजनीतिक परिस्थितियों पर निर्भर करेगा।"

"जब तक साधारण के साथ में विशेष को हम जोड़ नहीं पाएंगे, विशेष को जब तक साधारण के साथ नहीं जोड़ नहीं पाएंगे . . . . . तब तक हमारा विशेष मुद्दा तय नहीं हो सकता।"

"सही विचार तीन प्रकार के सामाजिक काम से आते हैं – 1. उत्पादन के लिए संघर्ष, 2. वर्ग संघर्ष एवं 3. वैज्ञानिक प्रयोग। . . . . . मनुष्य की समझ वस्तुस्थिति में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया से बनती है। 'उत्पादन के लिए संघर्ष' हमें वस्तुस्थिति के करीब ले जाता है। 'वैज्ञानिक प्रयोग' हमें वस्तुस्थिति बदलना सिखाता है।"

– शंकर गुहा नियोगी

तीन कविताएं

हाथ
सिर्फ जोड़ने के लिए नहीं,
हाथ
गर्दन को मरोड़ने के लिए भी होता है।
मेहनतकशों का हाथ
सिर्फ श्रम के लिए नहीं,
लुटेरों के हाथों को
तोड़ने के लिए भी होता है।

लाखों हाथों में काम की भूख,
लाखों पेटों में भूख की आग
और हर दिल में गुस्से की आग,
जंगल की आग सारी पहाड़ियों में।

सात कंटीले तार –
अब तक छूता था मजदूर
जब कभी इन तारों को,
होता था लहुलुहान उसका शरीर।
अब वह बन गया
सितार के सात तार।
पैदा करेगा मजदूर आंदोलन
इन तारों से आवाज!

• शंकर गुहा नियोगी